प्र मा ण प त्र

28 MAR 2002

मैं संस्तुति करता हूँ कि, इस लघु शोध–प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।

दिनांक 28 मार्च, 2002 ।

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

डॉ. सुनीलकुमार लवटे,
प्रपाठक, हिन्दी विभाग,
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि सरिता हिंदुराव शिंदे ने मेरे निर्देशन में, ''अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित वर्ग संघर्ष का अध्ययन'' शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, की एम्.फिल्. की उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, वे मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

कोल्हापुर।
दिनांक 28 मार्च, 2002।

(डॉ. सुनीलकुमार लवटे)
(शोध-निर्देशक)

: प्रख्यापन :

मैं प्रतिज्ञापित करती हूँ कि मैंने "अभिमन्यु अनत के उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में चित्रित वर्ग संघर्ष का अध्ययन" शीर्षक लघु-शोध-प्रबन्ध डॉ. सुनील्कुमार लवटे जी के निर्देशन में पूरा किया है । वह मैं शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर की एम्. फिल्. उपाधि के हेतु प्रस्तुत कर रही हूँ । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में जो तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं , वे अनुसंधान की मेरी अपनी उपलब्धि एवं योगदान हैं। उसकी मौलिकता वादातीत है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसके पूर्व किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

Shinde

कोल्हापुर । (कु. सरिता हिंदुराव शिंदे)

दिनांक: 28 मार्च , 2002 । (शोध-छात्रा)

– : प्राक्कथन : –

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के हिन्दी साहित्य के अग्रणि कथाकार है । आपको मॉरिशस के प्रेमचन्द के रूप में पहचाना जाता है । मॉरिशस की आजादी के बाद आपका लेखन विषय की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण है। शिल्प की दृष्टि से देखा जाए तो, नित्य नए प्रयोग करना आपकी प्रवृत्ति रही है । गुणात्मक, संख्यात्मक दोनों दृष्टि से आप श्रेष्ठ रचनाकार माने जाते है । आपने 1968 के लगभग लेखन प्रारम्भ किया । आज तक आपकी लेखनी निरंतर सक्रिय है । मॉरिशस के हिन्दी साहित्य के इतिहास में अभिमन्यु अनत जी ने जो व्यापक एवं बहुमुखी लेखन कार्य किया, उसको देखते हुए समीक्षकों ने मॉरिशस के हिन्दी साहित्य के इतिहास में अभिमन्यु अनत जी के लेखन कालखण्ड को ' अनत युग ' की संज्ञा से गौरवान्वित किया है । उपन्यास और कथा आपके सृजन की प्रमुख और प्रबल धारा बनी रही। इसके साथ उन्होंने नाटक, एकांकी, काव्य, संस्मरण, जीवनी जैसी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में हस्ताक्षर कर, अपने बहुमुखी साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दिया है । उनका यह समग्र साहित्य मॉरिशस की वर्तमान समाज जीवन की छबि है । जो पाठक मॉरिशस को जानना चाहते है, उनके लिए अभिमन्यु अनत जी का साहित्य दर्पण का कार्य करता है । अपने देश, वतन के प्रति असाधारण आस्था उनके साहित्य की प्रवृत्ति रही है । इस साहित्य के जरिए उन्होंने आप्रवासी भारतियों के मन में निरंतर बसी मातृभमि की ललक को शब्दबद्ध किया है । मॉरिशस के इतिहास की पृष्ठभूमि में वर्तमान जन–जीवन को चित्रित करने के उद्देश्य से अभिमन्यु अनत जी निरंतर लिखते आऐ है । वर्तमान जीवन की अनिश्चितता और भविष्य की चिंता, उनके लेखन के विचार और दर्शन बनकर उभर आते है।

जब मैंने एम्, फिल् में दाखिला लिया और अनुसंधान के विषय चुनने संबंधी विचार–विमर्श होता रहा तो मैंने मन–ही–मन यह निश्चय किया था कि ऐसा विषय चुना जाए जो सर्वथा नवीन एवं मौलिक हों । मात्र उपाधि के हेतु अनुसंधान करने के मैं खिलाफ थी । नव साहित्य मेरे आकर्षण का विषय था । अध्ययन में मुझे अभिमन्यु अनत के उपन्यास, और

नदी बहती रही ', ' एक बीधा प्यार' , ' तपती दोपहरी', ' हड़ताल कल होगी', ' पर पगड़डी नहीं मरती ' आदि उपन्यास प्राप्त हुए । उनमें से मुझे, ' हड़ताल कल होगी ' उपन्यास अधिक पसन्द आया । प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित वर्ग संघर्ष ने मुझे सबसे अधिक प्रेरित और प्रभावित किया । अपने निर्देशक डॉ, सुनीलकुमार लवटे जी से विचार–विमर्श कर मैंने "अभिमन्यु अनत के उपन्यास, 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित वर्गसंघर्ष का अध्ययन" को अपने अनुसन्धान का लक्ष्य निश्चित किया । आज प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की पूर्ति , लक्ष्य की सफलता का आनन्द देती है ।

जब मैंने उपर्युक्त विषय निश्चित किया तो उसके पूर्व मैंने अभिमन्यु अनत पर किए गए शोध–कार्य की जाँच–पड़ताल की । मुझे इस खोज में निम्नांकित चार शोध–कार्यो का पता चला ——

(1) सर्व प्रथम डॉ, श्यामधर तिवारी ने ' अभिमन्यु अनत : व्यक्तित्व और कृतित्व ' विषय पर मई , सन् 1980 में शोध–प्रबन्ध, गढ़वाल विश्वविद्यालय , की डी. फिल्, उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है ।

(2) डॉ, अनिल नैथानी ने ' अभिमन्यु अनत की उपन्यास कला : विश्लेषण एवं मूल्यांकन ' (1986) पर गढ़वाल विश्वविद्यालय से शोध कार्य किया है । उक्त विषय पर इन्हें डी,फिल, की उपाधि प्राप्त हुई है ।

(3) कु, अंजू बहुगुणा ने लघु शोध–प्रबन्ध ' अभिमन्यु अनत का लाल पसीना : औपन्यासिक मूल्यांकन ' 1988 में प्रस्तुत किया है।

(4) डॉ, कैलाश कुकरेती ने गढ़वाल विश्वविद्यालय में अपने शोध–प्रबन्ध, ' स्वातन्त्र्योत्तर आंचलिक उपन्यासों में नारी का मनावैज्ञानिक विश्लेषण , में गवेषणात्मक शोध–कार्य सम्पन्न करते हुए अभिमन्यु अनत के नारी पात्रों का एक अध्याय में विश्लेषण किया है।

उपर्युक्त शोध कार्य से अलग और मौलिक अनुसंधान के हेतु मैंने अनुसंधान का विषय "अभिमन्यु अनत के उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में चित्रित वर्गसंघर्ष का अध्ययन" निश्चित किया । मैंने प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध पाँच अध्यायों में लिखा है ।

प्रथम अध्याय है, "अभिमन्यु अनत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "। इसके अंतर्गत मैंने अभिमन्यु अनत का जीवन , व्यक्तित्व , उनके कृतित्व का विस्तार से विवेचन किया है । जीवनी के अंतर्गत अभिमन्यु अनत जी का जन्म-परिवार , शिक्षा–संघर्ष , वैवाहिक जीवन, पठन–पाठन , विभिन्न प्रभाव , प्रेरणाएँ , शौक, उनके साहित्य का सृजनारम्भ, जीविका , सम्मान आदि को प्रस्तुत किया है । इससे अभिमन्यु अनत जी की समग्र जीवनी पहली बार शब्दबद्ध हो पाई । यह मेरे अनुसंधान कार्य का मौलिक योगदान कहा जा सकता है । व्यक्तित्व के अंतर्गत मैंने उनके व्यक्ति और साहित्यकार के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है । कृतित्व के अंतर्गत उनके समग्र लेखन का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है । अन्त में उनके जीवन और साहित्य के अन्वय को स्पष्ट करनेवाला निष्कर्ष प्रस्तुत किया है ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है, "अभिमन्यु अनत के उपन्यासों का विषयगत विवेचन"। इसके अंतर्गत अभिमन्यु अनत के प्राप्त उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है । इससे उनके उपन्यास लेखन का विकासात्मक अध्ययन संभव हो सका । उपन्यासकार की उपन्यास लेखन कला का आलेख इस अध्याय की देन मानी जाएगी ।

तृतीय अध्याय, " अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' का शिल्पवैधानिक अध्ययन " अनुसंधान का पृष्ठभूमिगत अध्याय है । इसमें लक्ष्य रचना का कलात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है । इस अध्याय में प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' की समीक्षा पहली बार की गयी है, जो प्रस्तुत अध्याय की देन है ।

चतुर्थ अध्याय "अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित वर्गसंघर्ष का अध्ययन" है, जो प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का केन्द्रिय अध्याय कहा जाएगा । इसके अंतर्गत मैंने अनुसंधान के लक्ष्य के अनुसार आर्थिक संघर्ष, वर्ण संघर्ष के साथ ही इतिहास और प्रागतिकता के बीच के संघर्षो के विभिन्न पहलुओं की चिकित्सा और समीक्षा की है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का अंतिम अध्याय है, 'उपसंहार' । इसके अंतर्गत मैंने पूर्व अध्यायों के निष्कर्षो के आधार पर अभिमन्यु अनत के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया है । ऐसा करते समय मैंने अभिमन्यु अनत और मॉरिशस के हिंदी लेखकों की तुलना में अभिमन्यु अनत के औपन्यासिक योगदान को प्रस्तुत कर, अपने अनुसंधान कार्य की मौलिक उपलब्धि प्रस्तुत की है । मुझे विश्वास है कि अभिमन्यु अनत के साहित्य के आकलन,

अध्ययन में सुविधा होगी । इससे भविष्य में मॉरिशस के साहित्य और अभिमन्यु अनत के जीवन और साहित्य के संदर्भ में अनुसंधान कार्य करनेवालों को नई दिशा और प्रेरणा मिलेगी। साथ ही इससे मॉरिशस का हिन्दी साहित्य और आनिवासी भारतियों के हिन्दी प्रेम कों समझने में मदद मिलेगी ।

मेरे इस लघु शोध – प्रबन्ध को पढ़कर नए अनुसंधाता, प्रेरणा लेकर अभिमन्यु अनत के जीवन और साहित्य के नए पहलुओं की खोज में निकलेंगे और इससे अनुसंधान की विकास–यात्रा जारी रहेगी ।

लघु शोध–प्रबन्ध के अन्त में मैंने विभिन्न परिशिष्ट संलग्न किए है । जिसमें अभिमन्यु अनत जी के रचना–संसार की सूची और संदर्भ ग्रंथ सूची को प्रस्तुत किया है ।

मेरा यह कार्य निर्देशक डॉ, सुनीलकुमार लवटे जी के निर्देशन में पूरा हुआ । उनके द्वारा समय–समय पर किए गए सुयोग्य निर्देशन के लिए मैं उनकी ऋणी हूँ । हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने भी मुझे समय–समय पर प्रोत्साहित किया । साथ ही श्रीमती संगिता गोड़बोले जी द्वारा प्राप्त सहकार्य के लिए भी मैं ऋणी हूँ ।

प्रस्तुत कार्य पूर्ति में शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर, न्यू कालेज, कोल्हापुर, श्री स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर के समृद्ध ग्रन्थालयों का लाभ हुआ । प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध वहाँ के ग्रन्थपाल एवं कर्मचारियों के सहयोग से संभव हो सका ।

मेरे शोध–प्रबन्ध का टंकलेखन श्री. सांवत बालकृष्ण , कोल्हापुर ने किया । उनके हार्दिक सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूँ । लघु शोध–प्रबन्ध का प्रस्तुत शुद्ध पाठ उन्हीं के श्रम का फल है ।

उपरोक्त सभी महानुभाओं का आभार ।

Shinde

(कु. सरिता हिंदुराव शिंदे)

शोध–छात्रा ।

कोल्हापुर ।

तिथि 28 मार्च, 2002 ।

अभिमन्यु अनत

:– अ नु क्र म णि का –:

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (1 से 19 तक)

प्रास्ताविक

(अ) जीवनी :

(1) जन्म एवं परिवार

(2) वैवाहिक जीवन

(3) शिक्षा– संघर्ष

(4) पठन–पाठन

(5) प्रभाव

(6) प्रेरणा

(7) शौक

(8) साहित्य सृजनारम्भ

(9) जीवन दर्शन

(10) जीविका

(11) सम्मान

(ब) व्यक्तित्व :

(1) निड़र व्यक्तित्व

(2) विनम्र तथा पुस्तक प्रेमी

(3) आशावादी

(4) कवि

(5) कहानीकार

(6) नाटककार

(7) एकांकीकार

(8) निबंधकार

(क) कृतित्व :

(1) उपन्यास

(2) कहानी

(3) नाटक

(4) एकांकी

(5) कविता

(6) निबंध

(7) जीवनी

(8) संस्मरण

(9) यात्रा–विवरण

(10) दैनिकी लेखन

(11) आत्मकथा

(12) अनुवाद

(13) सम्पादन

(14) संकलन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : अभिमन्यु अनत के उपन्यासों का विषयगत विवेचन (20 से 31 तक)

प्रास्ताविक

(1) और नदी बहती रही
(2) एक बीधा प्यार
(3) तपती दोपहरी
(4) लाल पसीना
(5) हड़ताल कल होगी
(6) अपनी ही तलाश
(7) पर पगड़ड़ी नहीं मरती
(8) फैसला आपका
(9) मार्कट्वेन का स्वर्ग
(10) मुंड़िया पहाड़ बोल उठा
(11) शब्द भंग

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : -- अभिमन्यु अनत के उपन्यास ,' हड़ताल कल होगी' का
शिल्पवैधानिक अध्ययन (32 से 62 तक)

प्रास्ताविक

(1) कथावस्तु
(2) पात्र अथवा चरित्र–चित्रण
(3) कथोपकथन
(4) देश, काल और वातावरण
(5) भाषा एवं शैली
(6) उद्‌देश्य
(7) शीर्षक की सार्थकता

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : -- अभिमन्यु अनत के उपन्यास ' हड़ताल कल होगी' मे चित्रित
वर्गसंघर्ष का अध्ययन (63 से 82 तक)

प्रास्ताविक

(1) आर्थिक संघर्ष :--(अ) मजदूर संघर्ष
(2) वर्ण संघर्ष
(3) इतिहास और प्रागतिकता का संघर्ष

निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय : – उपसंहार (83 से 104 तक)

प्रास्ताविक

(अ) आनिवासी भारतीयों का हिन्दी साहित्य में योगदान

(ब) आनिवासी हिन्दी लेखक और अभिमन्यु अनत

(क) अभिमन्यु अनत का औपन्यासिक योगदान

(ड) अभिमन्यु अनत और वर्गसंघर्ष

परिशिष्ट : —

(1) अभिमन्यु अनत का रचना संसार (105 से 108 तक)

(2) संदर्भ ग्रंथ-सूची